ए.पी.एस. वन पथ

प्रकृति का उपहार

अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)
तेजस्विनावधीतमस्तु

अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय
रीवा, मध्यप्रदेश

संरक्षक
प्रो. राजकुमार आचार्य
कुलपति

संपादक
प्रो. अतुल पाण्डेय
संचालक, आई.क्यू.ए.सी.

सहयोग
प्रो. दिनेश कुशवाह
आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग

डॉ. लक्ष्मीकांत चंदेला
सह आचार्य, हिन्दी विभाग

प्रकाशक
प्रो. सुरेन्द्र सिंह परिहार
कुलसचिव

छायाकंनः
अभिजीत ताम्रकार

मुद्रकः
अनिल प्रिंटर्स, रीवा

अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)
कप्तान अवधेश प्रताप सिंह

माननीय राजेन्द्र शुक्ल जी
उप मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

'' अमर्त्य वीर पुत्र हो,
दृढ़-प्रतिज्ञ सोच लो,
प्रशस्त पूर्ण पंथ है
बढ़े चलो, बढ़े चलो।''
-जयशंकर प्रसाद

ए.पी.एस. वन पथ : विश्वविद्यालय परिसर की अद्वितीय विशिष्टता

प्रो. राजकुमार आचार्य
कुलपति

भारत प्राकृतिक रूप से बहुत सम्पन्न है। प्रकृति का ऐसा आशीर्वाद किसी देश को नहीं मिला। भारत में छः ऋतुएँ हैं। प्रकृति सिर्फ मनुष्यों को ही नहीं जड़ को पुष्पित पल्वित करती है। हमारे वन–पर्वत–नदियाँ–समुद्र सब रत्नाकर हैं। युगों से हम इनसे लाभान्वित होते रहे हैं। जब हवाओं ने रुख बदल दिया है तो मानव तासीर स्थिर कैसे रह सकती है? उसमें गिरावट स्वाभाविक है। इसके कारण अनेक हैं जिनमें से प्रमुख है– वनों का कटना, जंगल–पर्वत–पहाड़ का कम होते जाना जिससे शुद्ध हवा प्राप्त होने में कठिनाई हो रही है बल्कि फेफड़े अनेकोनेक रोगों से ग्रसित होते जा रहे हैं। शुद्ध वायु के अभाव में मानव–शरीर बीमारियों का घर बनता जा रहा है।

सोच के इसी धरातल ने अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा मध्यप्रदेश के प्रशासन को सजग–सावधान किया। फलतः 'एपीएस वन–पथ' की कल्पना उद्‌भूत हुई। नीम, कंजई, बबूल, सागौन आदि औषधिपरक पेड़–पौधों से सुन्दर वन निर्मित हुआ।

यह वन–पथ विंध्य पर्वत श्रृंखला का स्मरण मात्र नहीं कराता बल्कि उसकी प्रतिवृत्ति भी बनाते चलता है। विंध्य की प्राचीन का आदर्श लिए 'एपीएस वन–पथ' जीवन की नवीनता का प्रबोध बना हुआ है। वन–बिहार का अभिलाषी जब इस पथ का पथिक बनता है तो वन–पथ में विद्यमान औषधियाँ बोलती–बतियाती हुई कहती हैं, हे मानव! इसमें जीवन है, संस्कृति है, शिक्षा है, शक्ति है और दृष्टि विस्तार का स्वच्छतम लोक है।

यह पथ राहगीरों को वापसी पर बार–बार सुबह–शाम आने का न्यौता देता है। इस शर्त पर कि बदले में कुछ नहीं लेंगे, देंगे तो जीवन देंगे, बदल देंगे–मन–मतिस्कता को। जंगल रहेगा तो बिहार करोगे यथापि मन चंगा हो जायेगा। जैसे

देवेन्द्र कुमार की कविता कहती है– ''बरसात क्या आई, गये दिन सँवर गये। गड्डे–ताल, कुँआ–पोखर पानी से लबालब भर गये, गावों के बच्चों ने चुल्लू में रोपकर, छक्कर पीया–पिलाया, बचा खुचा नीचे गिराकर। पैरों को मल–मल के धोया, साफ किया, और चंगा हो गए।''

'एपीएस वन–पथ' अध्ययनरत् विद्यार्थियों, शोधार्थियों, खिलाड़ियों और स्वयंसेवी छात्र–छात्राओं का आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है। वे अक्षय ऊर्जा के संग्रहण व संचयन के निमित्त प्रातःकाल इस पक्ष में आते हैं, भ्रमण करते हैं एवं वनाच्छादित सौन्दर्य से सकारात्मक ऊर्जा ग्रहण करते हैं। जीवन को सुखमय–निरामय बनाने का संकल्प लेते हैं। वन को रक्षा, संरक्षा और पेड़–पौधे को लगाने के लिए वचनबद्ध होते हैं।

इसी के साथ शारीरिक सौष्ठव के उपादान उपकरण भी संस्थापित किए गये हैं, जिससे व्यक्ति अपनी इच्छानुसार अभ्यास करते हुए शारीरिक विन्यास कला में पारंगत होता है।

इस पुनीत पथ का लाभ वन्य–जीव भी उठा रहे हैं। अनुकूल मौसम और प्राकृतिक स्वच्छंदता पाकर क्रीड़ा–कौत्सुक करते हुए विचरण करते हैं। वन्य जीवों का यह व्यवहार जैव–विविधता का मान्य संदेश है एवं संकेत है प्रकृति में सभी जीवों की बराबरी का।' निश्चित ही जीवन के लिए सभी जीवों का होना अक्षरपरक है। इसी से जीवन सुवासित हो पाता है तथा काया निरोग रह पाती है। 'एपीएस वन–पथ' की यह अद्वितीय विशिष्टता है।

इस तरह अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय के इतिहास में नये अध्याय की शुरुआत है तथा भौगोलिक फलक (नक्शा) में वन–प्रांतर को संकल्पना शैक्षणिक संस्थान को उत्कृष्टता का आदर्श बना हुआ है। यह 'वन–पथ' प्रश्न संस्कृति, जैव–विविधता का प्रबोध बना है। यह विहंगम 'एपीएस वन–पथ रीवा विश्वविद्यालय की विशिष्ट पहचान है।

श्रीमती सीमा आचार्य एवं माननीय कुलपति प्रो. राजकुमार आचार्य
ए.पी.एस. वन के सेल्फी पाईट एवं विश्राम स्थल पर।

हरित परिसर - हमारी प्रतिबद्धता

प्रो. अतुल पाण्डेय
संचालक
आईक्यूएसी

विश्वविद्यालय परिसर की निराली ''छटा'' मुख्य द्वार से ही देखने को मिलने लगती है। यहाँ कप्तान अवधेश प्रताप सिंह जी की मूर्ति स्थापित है जो कप्तान साहब की दूरदृष्टि एवं उच्च शिक्षा के प्रसार व विस्तार के संकल्प की याद दिलाती है एवं विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों के लिए नित नई प्रेरणा का केंद्र बिंदु है। प्रशासनिक भवन के समक्ष स्थित मंदिर न सिर्फ आध्यात्मिक ऊर्जा का केंद्र है बल्कि इसका हरा–भरा प्रांगण विश्वविद्यालय परिसर में सुख एवं शांति का एहसास कराता है। परिसर में चारों ओर सड़क किनारे पट्टिकाएं लगाकर प्रेरक वाक्य लिखे गए है जिनमें से हर एक वाक्य में युवा विद्यार्थियों का मनोबल बढ़ाने और उनके जीवन को सकारात्मक दिशा देने की शक्ति है। विश्वविद्यालय की स्थापना के पचासवें वर्ष की स्मृति में निर्मित 'गोल्डन जुबिली पार्क' हरियाली और प्राकृतिक सौंदर्य में चार चांद लगाता है। शिक्षण विभागों के समक्ष एवं अभ्यांतरिक प्रांगण में स्थित उद्यान विभागीय परिसरों की खूबसूरती को परिमार्जित करते हैं। पौधा–रोपण की श्रृंखला में विश्वविद्यालय परिवार द्वारा कुलपति जी के कुशल नेतृत्व में हर वर्ष गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस, स्थापना दिवस एवं अन्य महत्त्वपूर्ण अवसरों पर मुख्य परिसर, ए.पी.एस. वन एवं आवासीय परिसर में पौधे लगाए एवं गोद लिये जाते हैं और उनके संरक्षण का संकल्प लिया जाता है।

विश्वविद्यालय परिसर में निर्मित वन अपनी ढ़ेर सारी विशेषताएँ लिए हुए है, जो अपने आगंतुकों की प्राकृतिक–सौंदर्य और मनोरंजन दोनों जरूरतों को पूरा करता हैं। अतएव मनोरम प्रकृति की सैर इसका प्रमुख आकर्षण है जो लोगों को आसपास के शांत–सौंदर्य को निहारने के लिए विवश करता है। यह वन आगंतुकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए तैयार किया गया है एवं पैदल चलने के लिए सुन्दर पथ भी निर्मित किया गया है।

उल्लेखनीय है कि लगभग पंद्रह वर्ष पूर्व तत्कालीन वन मंत्री एवं वर्तमान उप मुख्यमंत्री, मध्य प्रदेश श्री राजेन्द्र शुक्ल जी की पहल पर वन विभाग एवं विश्वविद्यालय के संयुक्त प्रयास से सघन वृक्षारोपण एवं उसके प्रभावी संरक्षण ने ही ए.पी.एस. वन की

पृष्ठभूमि तैयार की। इस अवधि में विश्वविद्यालय परिसर में बीस हजार से भी अधिक पौधों का वृक्षारोपण किया गया है जिनमें से लगभग 90 प्रतिशत पौधे तैयार होकर वृक्षों के रूप में विकसित हो चुके है। हरियाली का यह निराली श्रृंगार खूबसूरती का हेतु बना है। वस्तुतः यह परिसर शून्य कार्बन उत्सर्जन परिसर है तथा शहर के लिए फेफड़े का कार्य कर रहा है।

पिछले 15 वर्षों में विश्वविद्यालय द्वारा व्यापक योजना बनाकर इनके क्रियांवयन के प्रयास किये गए है जिससे प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण सह–अस्तित्व जैसी विशेषता दिखाई दे रही है। विश्वविद्यालय परिसर में वर्षा जल संचयन एक पारम्परिक एवं सतत् प्रक्रिया है जिसके अनुक्रम में वर्षा के पानी को बहने और बर्बाद नहीं होने दिया जाता है बल्कि उसे तालाब एवं टैंकों में एकत्र किया जाता है। जल संचयन का मुख्य उद्देश्य संग्रह नहीं बल्कि भू–जल स्तर में वृद्धि करना है। एकत्रित पानी को भू–जल पुनर्भरण के लिए प्रयोग किया जाता है। विश्वविद्यालय की लगभग 70 प्रतिशत भूमि हरियाली से अच्छादित है जहाँ पीपल–बरगद, नीम, शीशम, सागौन, बेल, बाँस, बेर–झरबेर, गुलमोहर, अमलतास आदि अनेक वृक्ष इस परिसर को प्राकृतिक वातावरण प्रदान करते है।

विश्वविद्यालय परिसर में स्थित ए.पी.एस. वन–पथ विश्वविद्यालय परिवार एवं क्षेत्र के निवासियों के लिए प्रकृति की एक अनुपम भेंट के रूप में सुस्थापित है जो कि मध्यप्रदेश के किसी भी विश्वविद्यालय के लिए एक अद्वितीय परिग्रह है। इस वन में विश्राम के कुछ क्षणों की इच्छा रखने वालों के लिए आकर्षक एवं आरामदायक कुर्सियाँ भी यही हैं। यहां एक ओपन जिम भी है जो कि फिटनेस के प्रति उत्साही लोगों को स्फूर्तिदायक व्यायाम में शामिल होने का एक अनूठा अवसर प्रदान करता है।

हरित परिसर, पर्यावरणीय स्थिरता के प्रति विश्वविद्यालय की प्रतिबद्धता को दर्शाता है साथ ही यह परिक्षेत्र पारिस्थितिकी संतुलन की समग्र वृद्धि में योगदान भी करता है। इसे तैयार करने में बहुत सावधानीपूर्वक जैव विविधता के सिद्धांतों को भी ध्यान में रखा गया है जिससे एक ऐसे स्थान का निर्माण हो सके जहाँ विभिन्न वनस्पतियाँ और जीव–जंतु एक संतुलित पारिस्थितिकी तंत्र में पनप सकें। यह दीर्घकालिक परिप्रेक्ष्य एक स्थायी पर्यावरण को बढ़ावा देने के प्रति विश्वविद्यालय के समर्पण को दर्शाता है जो आने वाली पीढ़ियों के लिये भी फलता–फूलता रहेगा।

दे दो मुझको यह वरदान,
किंचित कभी ना हो अभिमान।
प्रेम हृदय निज धार बहे,
करूणा का ही हो संचय।
ना तिमिर मोह के बादल हो,
ना काले ना श्यामल हो।
ना मिथ्या का अभिमान गहे,
ना ईर्ष्या के निज पुष्प फले।
लोभ तिरोहित हो अभिज्ञान,
प्रभु ऐसा दो मुझको वरदान।

मध्यप्रदेश के उप मुख्यमंत्री एवं रीवा के लोकप्रिय नेता माननीय श्री राजेन्द्र शुक्ल ए.पी.एस. वन पथ का निरीक्षण करते हुए। आपके ही सद्प्रयासों से इस नगर वन एवं पार्क की स्थापना की गई।

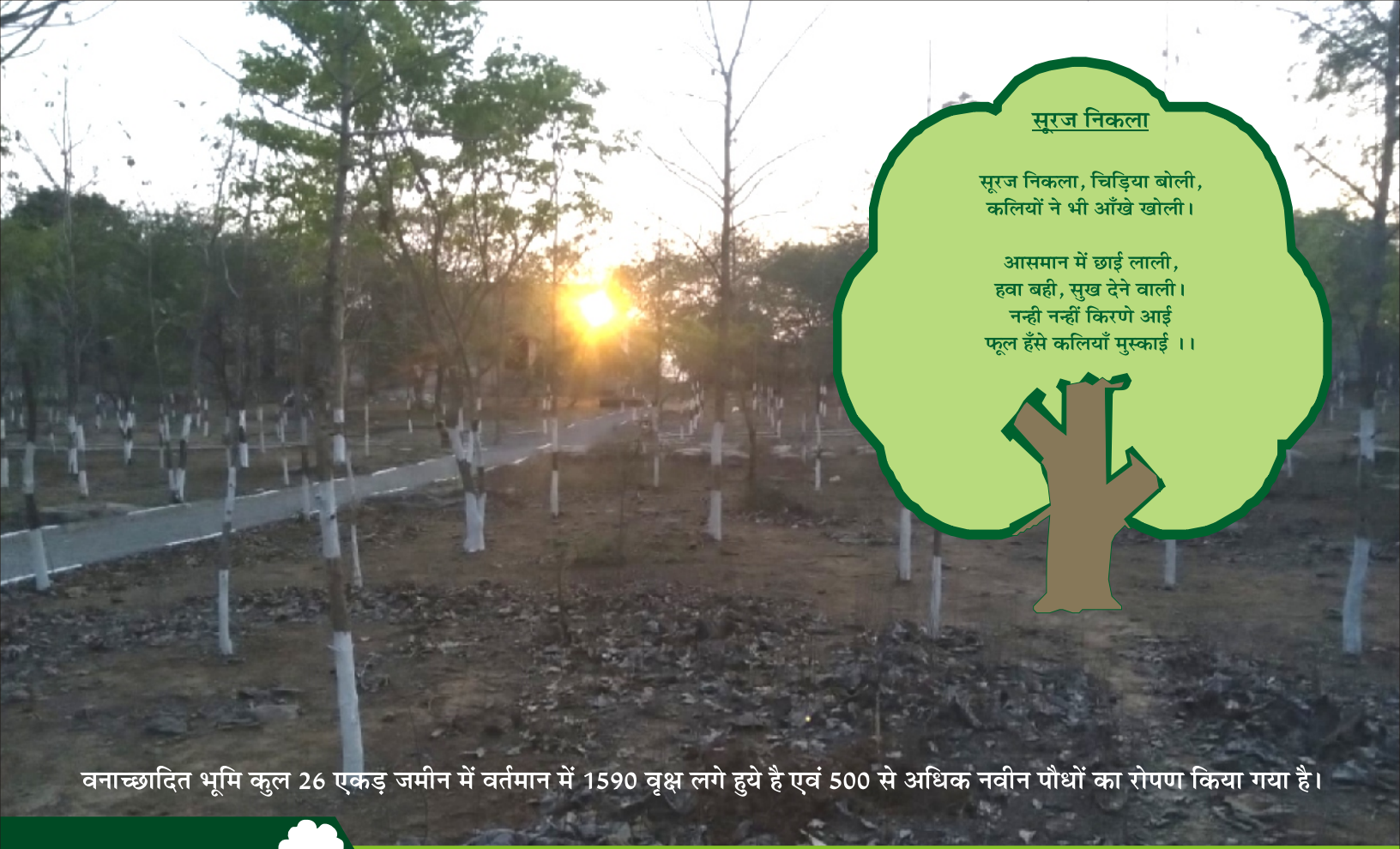

सूरज निकला

सूरज निकला, चिड़िया बोली,
कलियों ने भी आँखे खोली।

आसमान में छाई लाली,
हवा बही, सुख देने वाली।
नन्ही नन्हीं किरणे आई
फूल हँसे कलियाँ मुस्काई ।।

वनाच्छादित भूमि कुल 26 एकड़ जमीन में वर्तमान में 1590 वृक्ष लगे हुये है एवं 500 से अधिक नवीन पौधों का रोपण किया गया है।

''धसों इनमें डर नहीं है,
मौत का यह घर नहीं है,
उतर कर बहते अनेकों,
कल-कथा कहते अनेकों
नदी, निर्झर और नालें,
इन वनों ने गोद पाले''
- भवानी प्रसाद मिश्र

सुनो, प्रकृति की आकुल पुकार,
कहती है यह, वृक्ष मत काटो।
छलनी हो रहा शरीर हमारा,
अब तो हमारा क्रंदन सुन लो।
धरा भी क्षण-क्षण कह रही,
वृक्ष प्राणों का है आधार।
बंजर से इस सूने तन पर,
वृक्ष धरती का है श्रृंगार।

''बांसों का झुरमुट
संध्या का छुटपुट
है चहक रही चिड़ियाँ
टी-बी-टी-टुट-टुर''
- सुमित्रा नंदन पंत

सोचो गर ये वृक्ष न होते
हरियाली ये लाता कौन
शीलत शीतल पवन के झोंके
तन, ठंडक पहुंचाता कौन

सोचो गर ये वृक्ष न होते
कंद मूल फिर लाता कौन
पेट में चूहे कूद रहे जो
शांत उन्हें कराता कौन

सोचो गर ये वृक्ष न होते
श्वास हमें दिलवाता कौन
सदा सिलेंडर लिए ऑक्सीजन
उसको बोझ उठाता कौन

सोचो गर ये वृक्ष न होते
वन उपवन कहलाता कौन
पशु पक्षी के ये जीवन रक्षक
ठांव उन्हें दिलवाता कौन

''फिर क्या?
पवन उपवन-सर-सरिता
गहन-गिरि-कानन
कुँज-लता-पुँजों को पारकर
पहुँचा जहाँ उसने की कैली
कलि खिली साथ''
– सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

विश्वविद्यालय परिसर में वर्षा जल संचयन का हवाई दृश्य

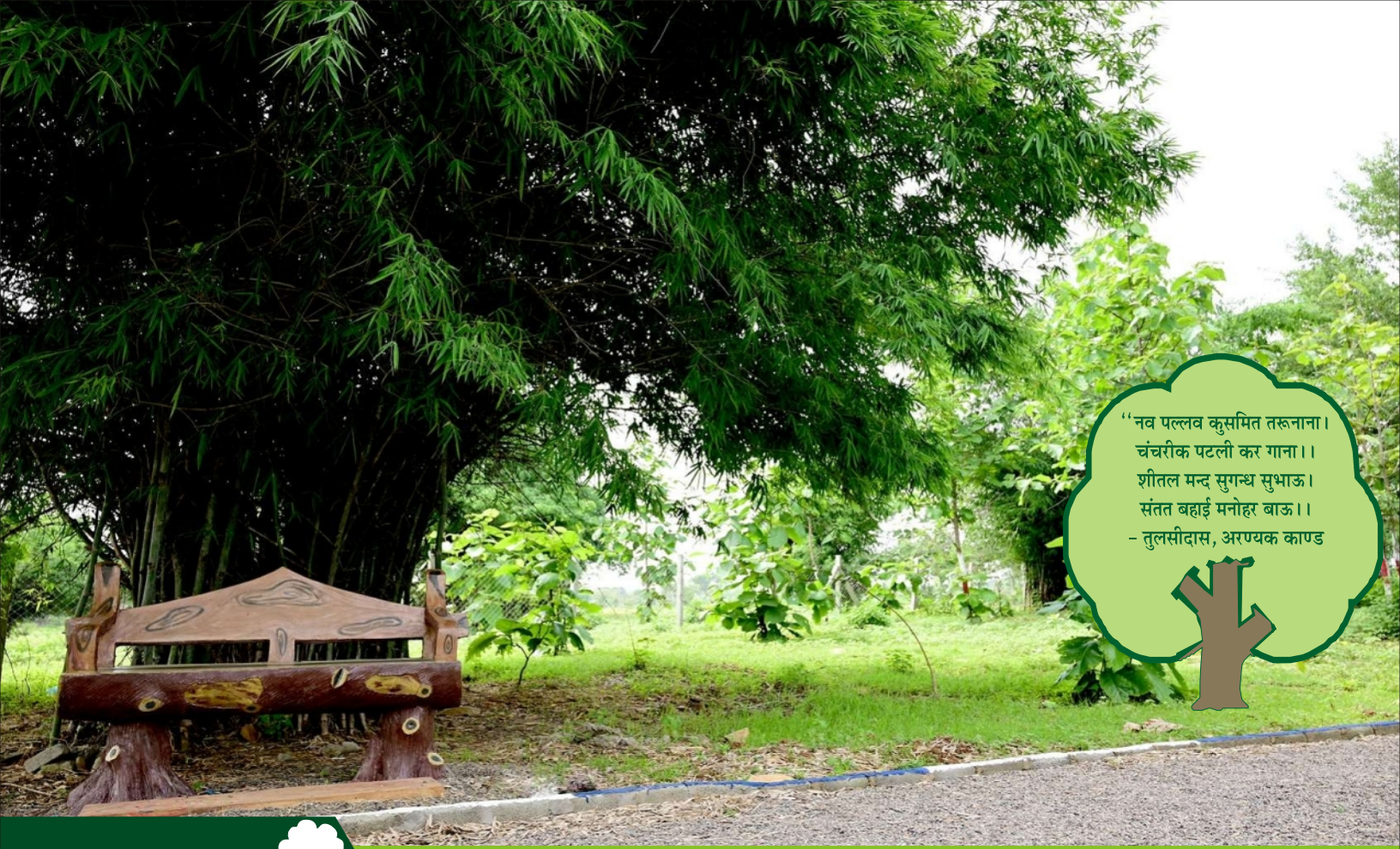
''नव पल्लव कुसमित तरूनाना।
चंचरीक पटली कर गाना।।
शीतल मन्द सुगन्ध सुभाऊ।
संतत बहाई मनोहर बाऊ।।
- तुलसीदास, अरण्यक काण्ड

पेड़ बचेंगे तो धरती बचेगी
जीवन बचेगा, कल बचेगा
पेड़ से ही वर्षा होगी
नदी बचेगी, जल बचेगा

“ जो इस वन - पथ में आयेगा,
अमृतमय जीवन लेकर जायेगा।”